SUNIL KUMAR

मेरा नाम सुनील है। मैं सरगाह जिले का रहनेवाला हूँ। मेरा गाँव रमोपुर है। मेरे गाँव में यहाँ से तो अच्छा ही माहौल था। लेकिन गाँव में कोई धन्धा या कुछ करने लायक नहीं था। कर लो तो चलता नहीं था। कोई धन्धा चलता नहीं था। यहाँ सबसे पहले मेरा भाई आया था।

---- आपका बचपन कैसे बीता?

बचपन भी सही बीता मेरा। मेरे माँ-बाप ~~सब हैं~~ सब थे। लेकिन कुछ दिन के बाद जब मैं ग्यारह साल का था तो मेरे पिताजी खत्म हो गए थे। उसके बाद मेरा सबसे बड़ावाला भाई था, उसने ही घर का सारा काम सम्भाल लिया। तब मैं पढ़ रहा था।

-- कौन-सी क्लास में आप पढ़ रहे थे? ——

मैं आठवीं तक पढ़ा हूँ। आठवीं पढ़कर मैं छोड़ दिया था सन् 93 में। 93 में दिल्ली आ गया। यहाँ आने के बाद कुछ दिन तो मैं पहले ~~हरकिशननगर~~ हरिकेशनगर में रहा। वहाँ भी साइकिल वगैरह की दुकान के काम करता था। रवान गया। वहाँ से आने के बाद फिर मैं यहाँ आया कालोनी में। भाई ने दुकान खोली, फिर यहाँ आ के अलग-अलग हम दोनों भाईयों ने दुकान खोली। पहले एक साथ में काम करते थे। फिर अलग-अलग शुरु होने लगा धन्धा। उसके बाद में शादी हुई मेरी। 99 में। 99 में शादी होने के बाद आराम से हम और हमारे बच्चे साथ में रहने लगे। अच्छी तरीके से। कमा रहे हैं न यहाँ कोई बुरा, नाविरददी या न गुण्डागर्दी है। ऐसा कुछ नहीं है।

-- आपके गाँव की क्या स्थिति है? --

गाँव में सब ठीक है माहौल काफी अच्छा है।

कोई लड़ाई-झगड़ा या किसी वारदात वगैरह कुछ भी नहीं है सब एक दूसरे को सम्मानपूर्वक रखते हैं, सब सम्मान देते हैं दोस्त वगैरह सब सही हैं मेरे सबसे ~~पहले~~ पहले दोस्त का नाम संजय है और दूसरे दोस्त का नाम अवधेश है तीसरे का नाम भूपेन्द्र है, तीन दोस्त हैं मेरे।

--आपके दोस्त सब क्या करते हैं? --
एक तो जो संजय है वह ड्राइवरी करता है ट्रैक्टर की। दूसरा दोस्त जो है वह गाँव में ही खेती बारी का काम करता है जो तीसरा दोस्त है मेरा वह भी कोई छोटी-मोटी नौकरी कर लेता है या किसी दुकान का काम कर लेता है सही चल रहा सब। थोड़ी शैतानी भी की। बचपन में क्या किसी को पता - दुनिया क्या है, दुनिया में कुछ नहीं पता। दुनिया में बड़े होने के बाद समझ में आता है बचपन में क्या थे, क्या हो गए अब। बचपन भी सही गुजरा।

--- यहाँ के बारे में कुछ बताइए।

यहाँ भी सही रह रहे हैं अपनी कॉलोनियों में।

--- आप जब आए थे, कैसा कालोनी था?

कालोनी में जब मैं आया था, तब बहुत दिक्कत था। कुछ भी नहीं था। लाइट वगैरह की कोई व्यवस्था नहीं थी। पानी की समस्या इतनी कठिन थी, न कोई नल था, न कोई सरकारी तरफ से कुँआ था, कुछ भी नहीं था। बाद में आकर सरकारी ट्यूबवेल भी गड़ गए। तब थोड़ी राहत मिली। यहाँ पत्थर इतना है पानी ही नहीं होता है नहीं।

इस गुमटी में तो जैसा धन्धा चल जाय, सौ-पचास रुपये आ जाय, २० रुपये भी आ जाय, पचास रुपये आ जाय। इस तरीके से अपना गुजारा किसी तरीके से चलाते हैं धन्धे में। जो धन्धा अब से पहले था, वह अब नहीं है। पहले सौ पचास दिनभर में कमा लेते थे, अब तो पूरे पचास रुपये भी शाम तक नहीं आ पाते हैं क्यों इस टाइम कोई काम ही नहीं है। दुकानदारी ग्राहक ही नहीं। दुकानदारी है ही नहीं।

--- ऐसा क्यों हुआ?

ऐसा इसलिए हुआ, जब फैक्ट्रियाँ बन्द हो गई। यहाँ जब जनता ही नहीं है, तब जनता हमारे पास कैसे आएगी। इसलिए मुश्किल है यहाँ कोई काम करवाने आएगा या इसके पास पैसा हो। तब हमारे पास आएगा। तभी हमारा धन्धा चलेगा, सबका चलेगा। तभी हो सकता है जब जनता ही नहीं होगी काम क्या होगा? कभी-कभी इनकम नहीं होती। किसी तरीके का गुजारा होता है। सौ पचास जो भी आ जाय शाम तक। इसी में गुजारा करते हैं अपना। कोई बच्चे नहीं हैं अभी।

--- आपकी बीवी कितने क्लास तक पढ़ी है?

पाँचवीं तक पढ़ी है।

--- वह क्या काम करती है?

कोई काम नहीं करती है। ऐसे ही रहती है।

--- मतलब जो कमाते हैं, बस आप ही कमाते हैं।

हाँ बस मैं ही कमाता हूँ। मुझे घर भी पैसे

अभी कुछ दिन पहले मेरी मौसी, मम्मी की शादी हुई थी। वह आठ-दस रोज रह के गई। उनको पाँच सौ रुपये दिया। जब भी घर जाते हैं, रक्षाबन्धन में जाते हैं, सबको पाँच रुपये देके आते हैं। देते हैं घर पर खर्चे के लिए।

खाली टैंक में बैठते हैं, कुछ पढ़ते हैं। अखबार ले लेते हैं। वही पढ़ते हैं। कुछ न कुछ दिमाग लड़ाते रहते हैं बैठे-बैठे।

--- कभी सिनेमा देखने नहीं जाते ? --

नहीं सिनेमा हॉल तो कभी नहीं जाते हैं। कभी भी आज तक सिनेमा हॉल नहीं गए। इतना बड़ा हो गया हूँ। सिनेमा हॉल में आजतक कोई फिल्म नहीं देखा है।

--- क्यों, आपको अच्छा नहीं लगता है ?

नहीं, अच्छा नहीं लगता है। मैं कभी जाता ही नहीं सिनेमा हॉल पर। अपने घर पर टी.वी. है, देख लेता हूँ। कभी सिनेमा हॉल पर नहीं जाता हूँ।

--- बीवी को लेकर घूमने कहीं नहीं गए ?

नहीं, कहीं नहीं, बड़े भाई वजह से कहीं नहीं जाता हूँ। इसके डर के मारे कहीं नहीं जाता हूँ।

--- क्यों वो मना करते हैं ?

हाँ, वो मना करते हैं। कहते हैं कभी भी कहीं जाओ तो अकेले जाओ और घर लौट कर जल्दी आओ। वो भी साथ में आते हैं

जिन्दगी का क्या सपना, व्यतीत कर रहे हैं किसी तरीके से। कट रहा है जिस तरीके से, काट रहे हैं। जैसा ऊपर वालों ने बनाया है। चल रहा है किसी तरीके से। चला रहा हूँ।

--- मनोरंजन के लिए क्या-क्या करते हैं?

मनोरंजन में जैसा होता है, वैसा ही करते हैं। जैसा सब करते हैं।

--- पीते भी नहीं?---

नहीं, वह सब नहीं करता हूँ। केवल एक तम्बाकू के अलावा कुछ भी नहीं करता हूँ। बीड़ी-सिगरेट कुछ भी नहीं। तम्बाकू के अलावा कुछ भी नहीं। दारू-आरू कुछ नहीं। मैं वैष्णव हूँ।

--- जिन्दगी का कोई प्लानिंग है?

जिन्दगी का प्लानिंग क्या, जैसा होगा, वैसा देखा जाएगा। जब पैसा हो, तब जब मर्जी बनालो। पैसा हो जेब में, जैसा प्लानिंक करता है कर लो। पैसा होगा नहीं तो क्या कर सकता है।

--- दिल्ली में कैसे आए, कोई पहले था?

दिल्ली में सबसे पहले मेरे जीजा श्री आए थे। जब वो आए थे, इसके बाद मेरा भाई आया था। उसके बाद मैं आया। उसके दो-तीन साल रहने के बाद मैं आया।

--- गवर्मेंट की तरफ से ---

कालोनी में लाइट भी आ गई। नल भी गड़ गए। हर तरह से थोड़ी राहत मिली।

-- यहाँ कोई लेबर-यूनियन भी है?

हाँ, इसी कालोनी में।

-- आपने किसी पॉलिटिकल एक्टीविटी में भाग लिया?

हाँ, थोड़ा बहुत। एक बार मैं वोटर लिस्ट में नाम दर्ज करवाने भी गया। लेकिन नाम ही नहीं आया। यहाँ का हमने राशन कार्ड भी बनवा लिया, फिर भी वोटर लिस्ट में नाम नहीं आया। दो तीन बार आता हूँ, वोटर लिस्ट में नाम आता ही नहीं। राशनकार्ड पर राशन देते हैं। अच्छा है फिलहाल। बिल्कुल साफ राशन आता है। कुछ भी हो हम तो यही सोचते हैं, हमारी दुकान में साफ मिलता है, तो और जगह भी साफ होगा।

-- कभी कोई पोलीटिकल लिडर आता है इधर?

नहीं। कभी कोई आता है नजर तो है, पर सरकार चाहे नया सरकार का ध्यान आ जाए तो कभी कुछ हो जाए, नहीं तो कुछ भी नहीं। यहाँ कोई कुछ नहीं कहता। बस यही नहर विभाग वाले शुरू में कहते थे, किसी और जगह में लगाओ कहते हैं, न आदमी पहले छोटी पेटी रखता है, फिर पूरे दुकान पर कब्जा कर लेता है आदमी फिर थोड़ी जगह माँगते हैं। इसी तरीके से बोलते थे। पहले बोला मैंने कहा- भाई चार दिन बैठते हैं, जब तक कहोगे

तुम्हारी मर्जी पर हूँ।

-- कोई संगीत वगैरह गाते हैं; जैसे कोई देहाती गीत?

नहीं ऐसा कुछ नहीं। सुन लेता हूँ। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं। कोई संगीत वगैरह कुछ नहीं। बस काम में दिमाग रहता है। एक तरफ दिमाग रखो तो उसी तरफ रहेगा। संगीत की तरफ फँस जाओ तो संगीत की तरफ दिमाग रहेगा।

— — — — —